कबूतर – बिदपई की कहानी



प्राचीन भारतीय कहानी

कबूतर – बिदपई की कहानी

एक दिन एक बुद्धिमान कौवे ने देखा कि एक शिकारी ने अपना जाल फैलाया और कबूतरों के झुंड को पकड़ लिया. लेकिन कबूतरों के राजा ने पुकारा, "आओ हम एक हो जाएं और एक-साथ मिलकर उड़ जाएं." फिर पक्षियों ने एक-साथ अपने पंख फड़फड़ाए और वे जाल को अपने साथ लेकर हवा में उड़े. वे जीरक के बिल की ओर उड़े. जीरक एक दोस्त चूहा था जो कबूतरों को मुक्त कराने के लिए उनके जाल को कुतरता था.

जीरक और कबूतरों की दोस्ती से प्रभावित होकर कौवे ने चूहे से पूछा कि क्या वो भी उसका दोस्त बन सकता है. चूहा, पहले तो किसी ऐसे जीव पर भरोसा करने के लिए तैयार नहीं था, जिसे वो अपना प्राकृतिक दुश्मन मानता था, फिर भी उसने जोखिम लेने का फैसला किया. भारत की क्लासिक दंतकथाएं पहली बार 300 ई.पू. में लिखी गईं थीं. बिदपई की दंतकथाएं भारत से लेकर निकट के समस्त पूर्वी देशों में फैलीं, और दुनिया के उन हिस्सों में बच्चे आज भी उनका आनंद लेते हैं.






कबूतर – बिदपई की कहानी




दोस्ती के बारे में एक कहानी

बहुत पहले, भारत में एक राजा और उनका विश्वसनीय सलाहकार, बिदपई रहता था. राजा ने छल और ईर्ष्या के बारे में कई कहानियाँ सुनीं थीं और उनसे वो नाखुश था और तंग आ गया था. अंत में उसने बिदपई ने उसे सच्ची मित्रता के बारे में एक कहानी सुनाने के लिए कहा. "अजनबियों के बीच प्यार और वफादारी कैसे हो सकती है?" राजा ने पूछा.

"ठीक है महाराज," सलाहकार ने उत्तर दिया, "खतरे के समय में किसी दोस्त की वफादारी को कभी मापा नहीं जा सकता है." इन शब्दों के साथ बिदपई ने कबूतर की अपनी कहानी शुरू की.





एक विशाल जंगल में, जहां कई शिकारी पक्षियों का शिकार करने आते थे, एक बड़ा और शानदार पेड़ था. उसकी शाखें फलों और पत्तों से लदीं थीं. उस पेड़ में एक बुद्धिमान कौवा रहता था. एक दिन जब वो भोजन की तलाश में शहर की ओर उड़ रहा था, तो कौवे ने देखा कि एक शिकारी पेड़ के नीचे अपना जाल फैला रहा था, और जाल को पके कुसुम के बीजों से ढँक रहा है. तभी कबूतरों का एक झुंड उड़कर वहां आया. कबूतरों ने जाल को नहीं देखा और वो बीजों को खाने में व्यस्त हो गए. कुछ देर में सभी कबूतर जाल में फंस गए.





जब शिकारी ने पकड़े गए कबूतरों को देखा, तो वो बहुत खुश हुआ और पेड़ की ओर बढ़ा. कबूतरों के राजा ने अपने अनुयायिओं से कहा कि वे डरें नहीं. "चलो हम एकजुट होकर शिकारी के यहाँ पहुँचने से पहले ही एक साथ मिलकर उड़ चलें," उसने कहा. पक्षियों ने एक साथ अपने पंख फड़फड़ाए और शिकारी के पास आते ही वे लिपटे हुए जाल को अपने साथ लेकर उड़ गए.



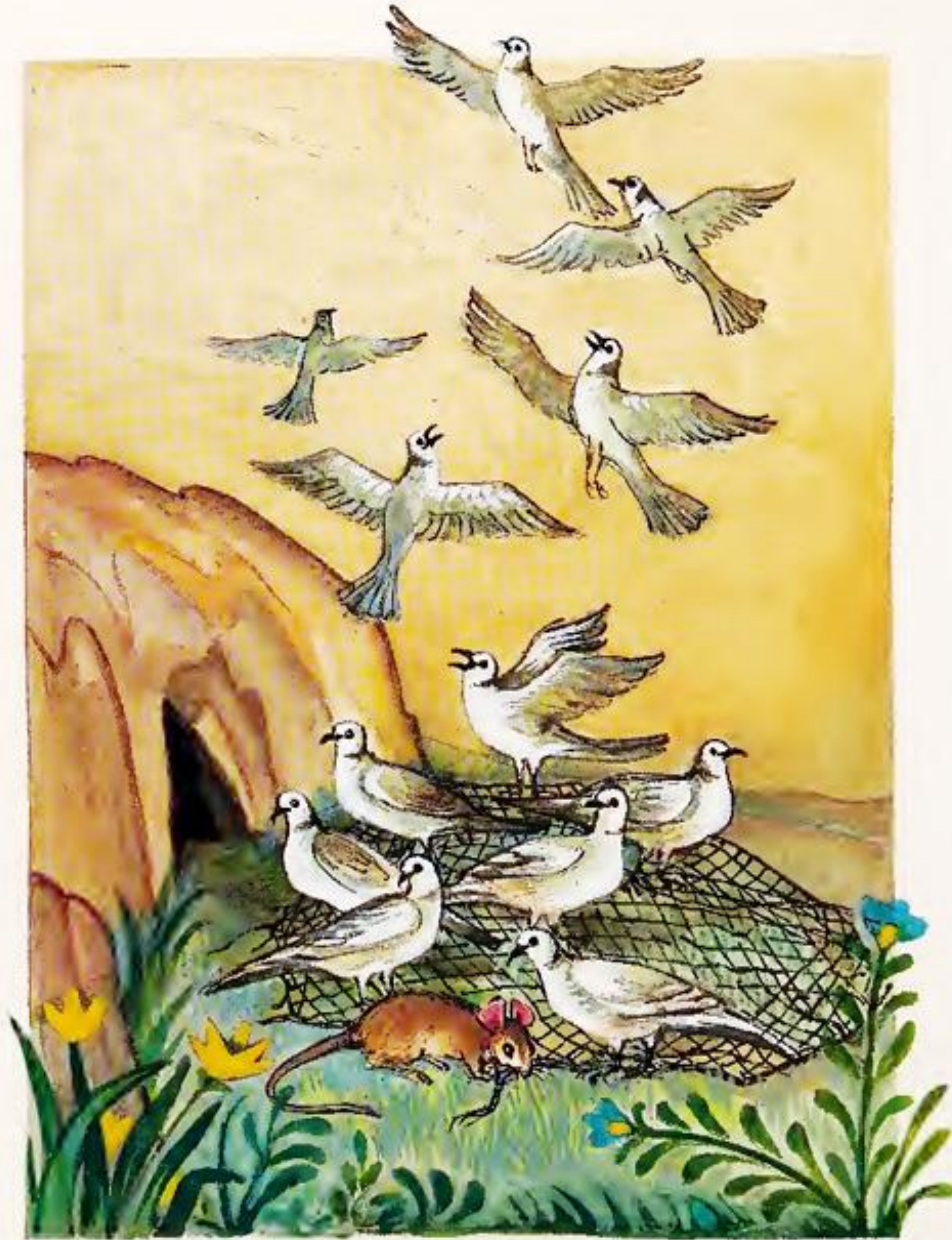




क्रोधित शिकारी ने कबूतरों का पीछा किया. कौआ, यह जानने को उत्सुक था कि उन कबूतरों का आगे क्या होगा. इसलिए वो उनके पीछे-पीछे उड़ा. कबूतरों ने पहाड़ियों और घरों पर उड़ान भरी और दुखी शिकारी को अपने पीछे छोड़ दिया. फिर वे अपने चूहे दोस्त - जीरक के बिल के पास जाकर उतरे.

"प्रिय दोस्त जीरक," कबूतरों का राजा चिल्लाया, "कृपया जल्दी आओ!"





जीरक ने अपने दोस्तों की आवाज पहचान ली और वो तुरंत अपने छेद से बाहर निकला. पक्षियों को जाल में फँसा देखकर, उसे पता था कि उसे क्या करना चाहिए. उसने रस्सियों को तब तक कुतरा जब तक कि वे कट न गईं. सभी कबूतर, फिर से मुक्त होने पर बड़े प्रसन्न हुए, ओर उन्होंने उड़ान भरने से पहले चूहे को धन्यवाद दिया. फिर ज़ीरक अपने बिल में वापिस चला गया.

उसने जो कुछ देखा उससे प्रभावित होकर कौवे ने वहां रुकने का फैसला किया. उसने जीरक, चूहे को बुलाया और उससे कहा कि वो भी उसका दोस्त बनना चाहता था. वैसे चूहा किसी भी कौवे पर भरोसा नहीं कर सकता था, क्योंकि कौवे को चूहों का प्राकृतिक दुश्मन माना जाता था. जीरक अपने घर की सुरक्षा छोड़ने को तैयार नहीं था इसलिए उसने कौवे को वहां से चले जाने को कहा.

"लेकिन चूहे," कौवे ने कहा, "हम आज तक कभी मिले ही नहीं. फिर तुम मुझे अपना दुश्मन कैसे मान सकते हो?"

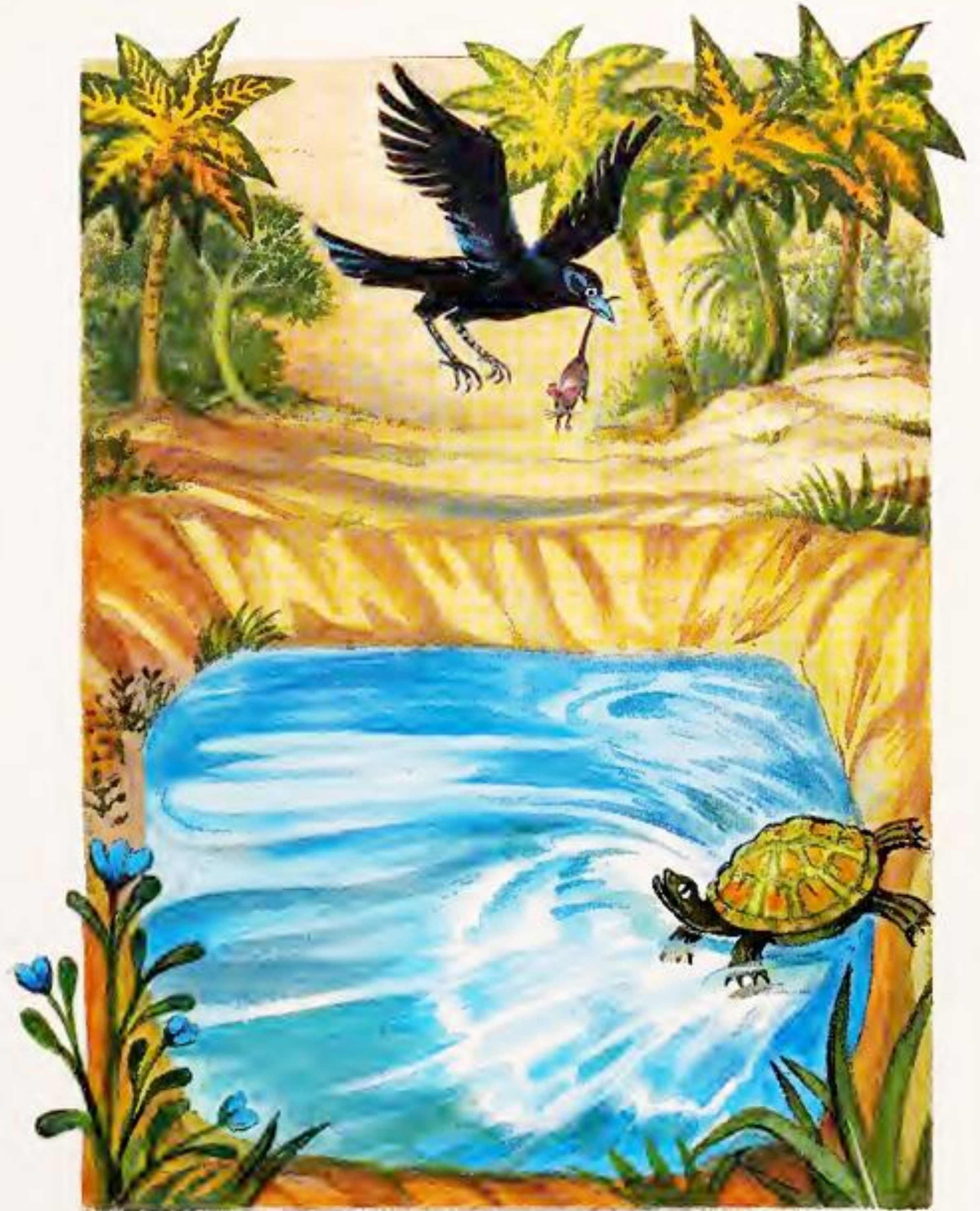




अंत में चूहा इस बात से आश्वस्त हो गया कि कौवे का मतलब उसे कोई नुकसान पहुँचाना नहीं था. फिर चूहा अपने बिल से बाहर आया और उसने दोस्ती का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया. समय के साथ उनकी दोस्ती बढ़ती गई और वे एक-दूसरे पर भरोसा करने लगे. कौआ, चूहे के लिए खाने की चीज़े लाता था, और चूहा, कौवे के लिए अपने द्वारा इकट्ठे किए चावल बचाकर रखता था.

एक दिन कौवे ने देखा कि शहर, धीरे-धीरे उनके जंगल के करीब और करीब बढ़ रहा था. फिर उसने सुझाव दिया कि वे अपने रहने के लिए कोई सुरक्षित जगह खोजें. "आगे दक्षिण में एक तालाब है जहाँ मेरा दोस्त कछुआ रहता है," कौवे ने चूहे से कहा. "उसके पास का जंगल सभी प्रकार के बीजों और फलों से भरा हुआ है." चूहा, कौवे के साथ वहां जाने के लिए तैयार हो गया. फिर कौवा, चूहे की पूंछ पकड़कर उसे कछुए वाले तालाब में ले गया. कछुआ, कौवे और चूहे को एक साथ उड़ते हुए देखकर इतना चकित हुआ कि वो पानी में अपने सिर के बल गिर गया.





"डरो नहीं!" कौवे ने कहा. "चूहा और मैं, दोनों दोस्त हैं. हम तुम्हारे तालाब के किनारे शांति और मित्रता से रहने आए हैं."

कछुआ उनका स्वागत करने के लिए पानी से बाहर निकला. फिर कौवे ने एक पेड़ में अपना घोंसला बनाया, जबकि चूहे ने उसी पेड़ की जड़ों में एक बिल खोदा.



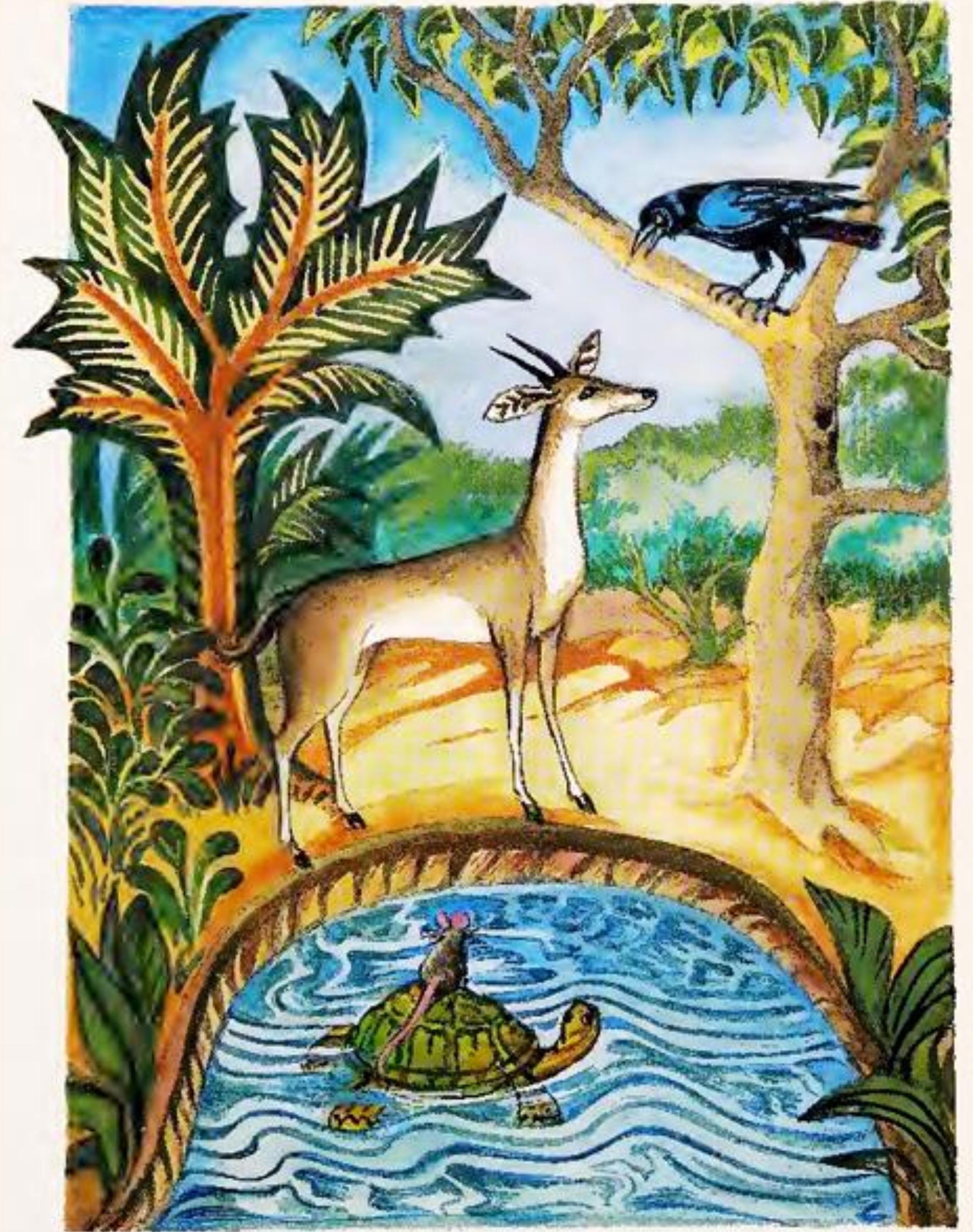
कौवा, चूहा और कछुआ एक-दूसरे की संगत का आनंद लेते थे और आराम और सद्भाव में अपने दिन गुजारते थे. एक दिन, एक हिरन तालाब की ओर भागा हुआ आया. ऐसा लगा जैसे कोई शिकारी उसका पीछा कर रहा हो. भयभीत होकर कछुआ तालाब में कूद गया, चूहा अपने बिल की ओर भागा, और कौवा अपने पंख फड़फड़ाकर एक पेड़ की शाख में छिप गया.



जब उन्होंने देखा कि वहां कोई शिकारी नहीं था और हिरन केवल प्यासा था और तालाब में पानी पीने के लिए आया था, तो वे अपने-अपने घरों से बाहर आए. हिरन ने उन्हें बताया कि वो वास्तव में शिकारियों से बचने के लिए भाग रहा था. फिर तीनों मित्रों ने हिरन को उनके शांतिपूर्ण स्थान पर आकर रहने का निमंत्रण दिया और वो उसके साथ अपना भोजन साझा करने को राज़ी हुए.

फिर हिरन भी तालाब के पास ही रहने लगा. अब चारों दोस्तों का यह रिवाज बन गया कि वे हर दिन एक-साथ भोजन करने के लिए मिलते थे.





फिर एक दिन हिरन दिखाई ही नहीं दिया, जिससे उसके बाकी दोस्त बहुत चिंतित हुए. उन्हें डर था कि कहीं उस पर कोई विपदा न आई हो. इसलिए उन्होंने सुझाव दिया कि कौवा उड़कर जाए और हिरन की तलाश करे.

कौवा हवा में उड़ा और जल्द ही उसने दुखी हिरन को एक जाल में फंसा हुआ पाया. कौवे ने हिरन को आश्वासन दिया कि वो जल्द ही लौटकर आएगा. फिर कौवा वापस उड़ा और उसने चूहे और कछुए को उसने जो कुछ देखा था वो बताया. इसके बाद तीनों अपने दोस्त को बचाने के लिए निकल पड़े.



जब वे हिरन के पास पहुँचे, तो चूहा रस्सियों को चबाने लगा. कौवा और कछुआ इस बीच चिंतित थे कि अगर शिकारी वापस आ गया तो उन्हें क्या करना चाहिए. उनके पास व्यर्थ करने के लिए बिल्कुल समय नहीं था, क्योंकि अब जाल से मुक्त हिरन जल्दी से दौड़ सकता था, चूहा कहीं छिप सकता था, और कौवा उड़ सकता था, लेकिन बेचारा कछुआ खुदको बचने के लिए बहुत धीमा था. जब वे बातें कर रहे थे, तभी कौवे ने लौट रहे शिकारी को आते हुए देखा.





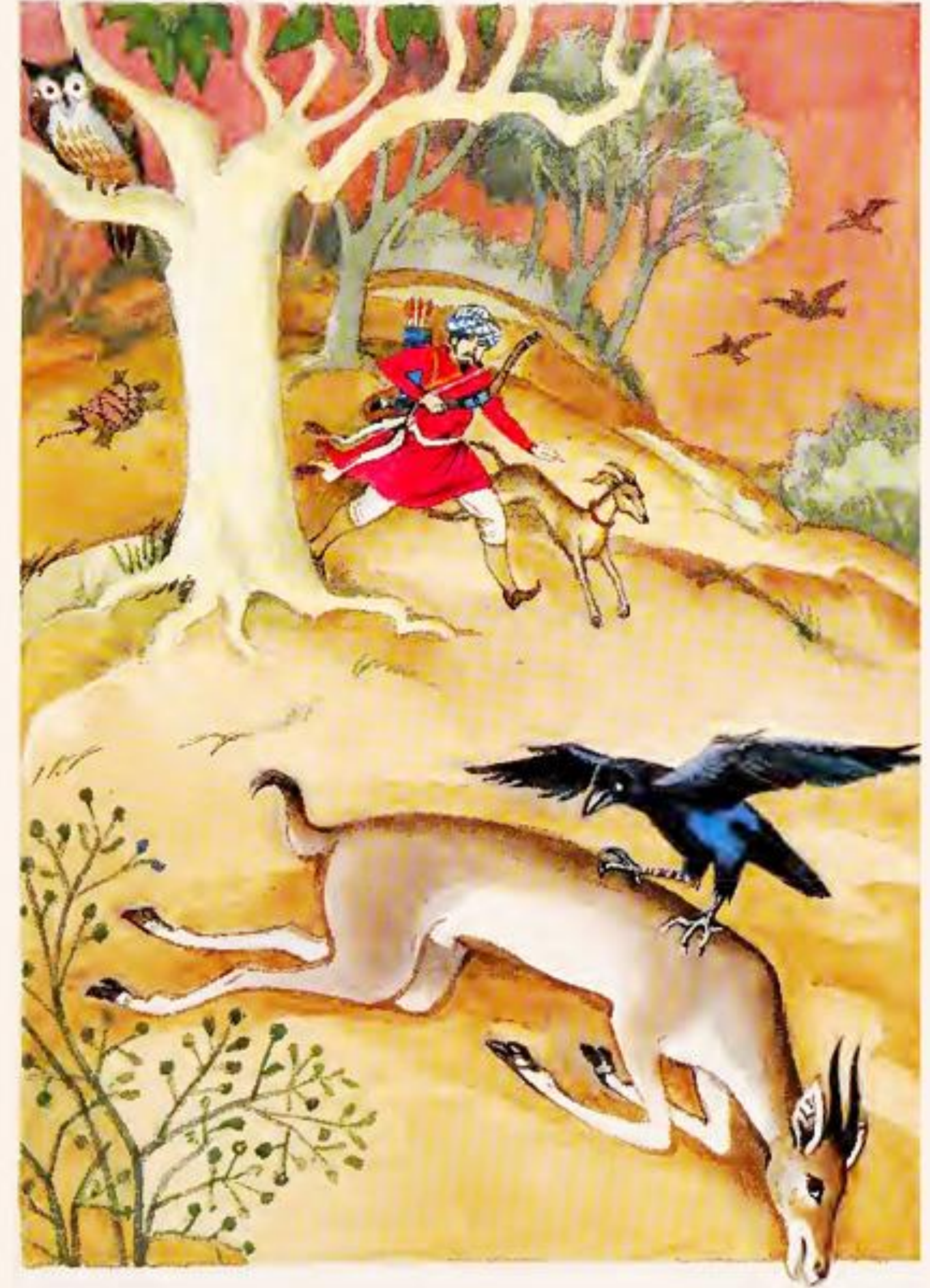
हिरन और चूहा भाग गए. कौआ एक पेड़ में छिप गया, लेकिन बेचारा कछुआ भाग नहीं सका. शिकारी ने कछुए को पकड़ लिया और उसे एक मजबूत रस्सी से बांध दिया. उसने उसे अपने कंधे पर लटकाया और वो अपने गाँव की ओर चलने लगा.



शिकारी की दृष्टि से दूर बाकी तीनों मित्र अपने मित्र कछुए को बचाने की योजना बनाने के लिए एकत्र हुए. कौवे ने हिरन को शिकारी के रास्ते में लेटने और घायल होने का नाटक करने को कहा. उसी समय, कौआ, हिरन के ऊपर बैठकर और उसके पेट पर चोंच मारनी थी. इस तरह उन्होंने शिकारी को धोखा देने की योजना बनाई.

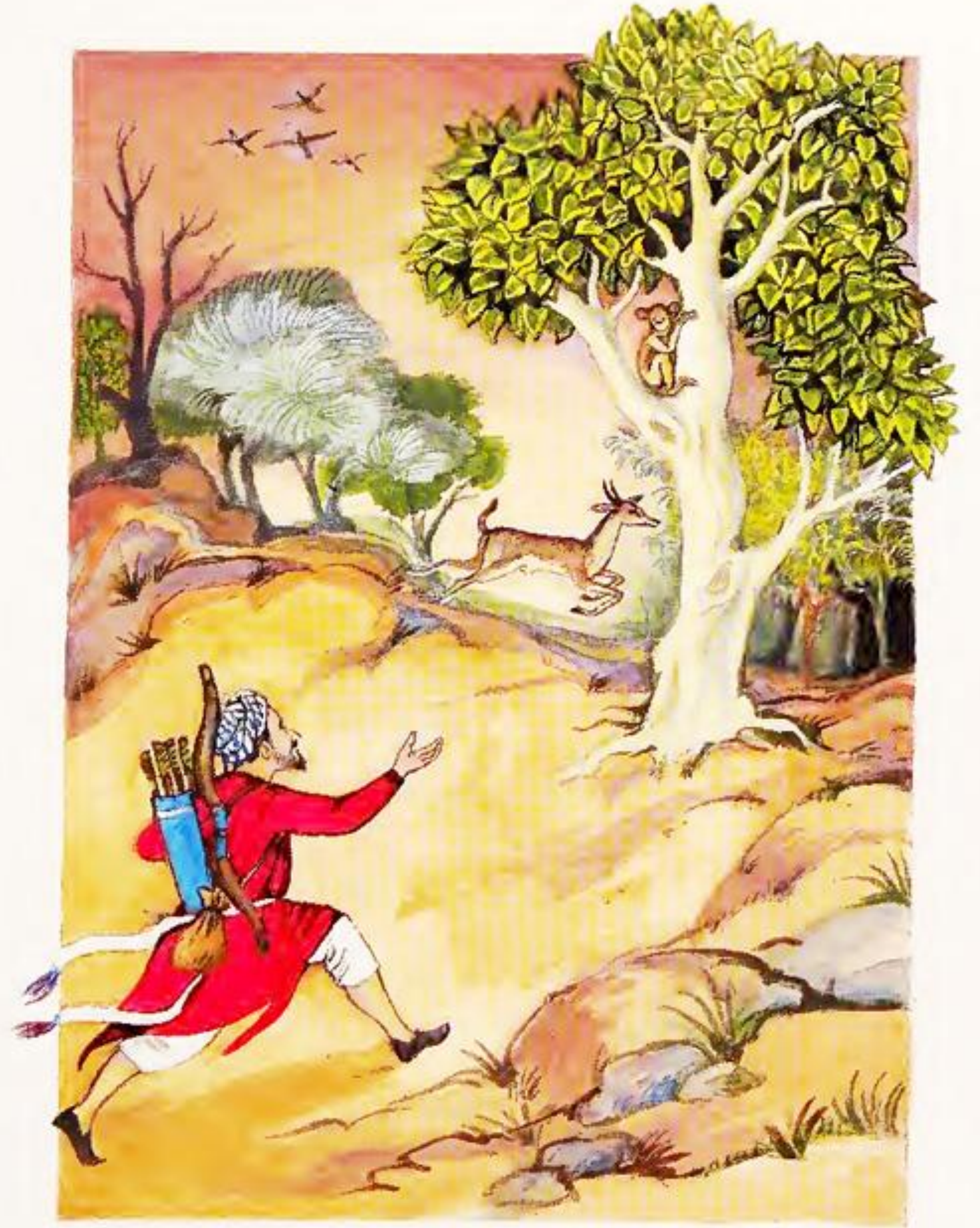
उनके पास व्यर्थ करना का समय नहीं था, क्योंकि वे शिकारी को आते हुए सुन सकते थे. कौवे की सलाह के बाद, हिरन शिकारी के रास्ते में लेट गया और कौवा हिरन के ऊपर बैठ गया. इस बीच, चूहा पास की एक झाड़ी में छिप गया.





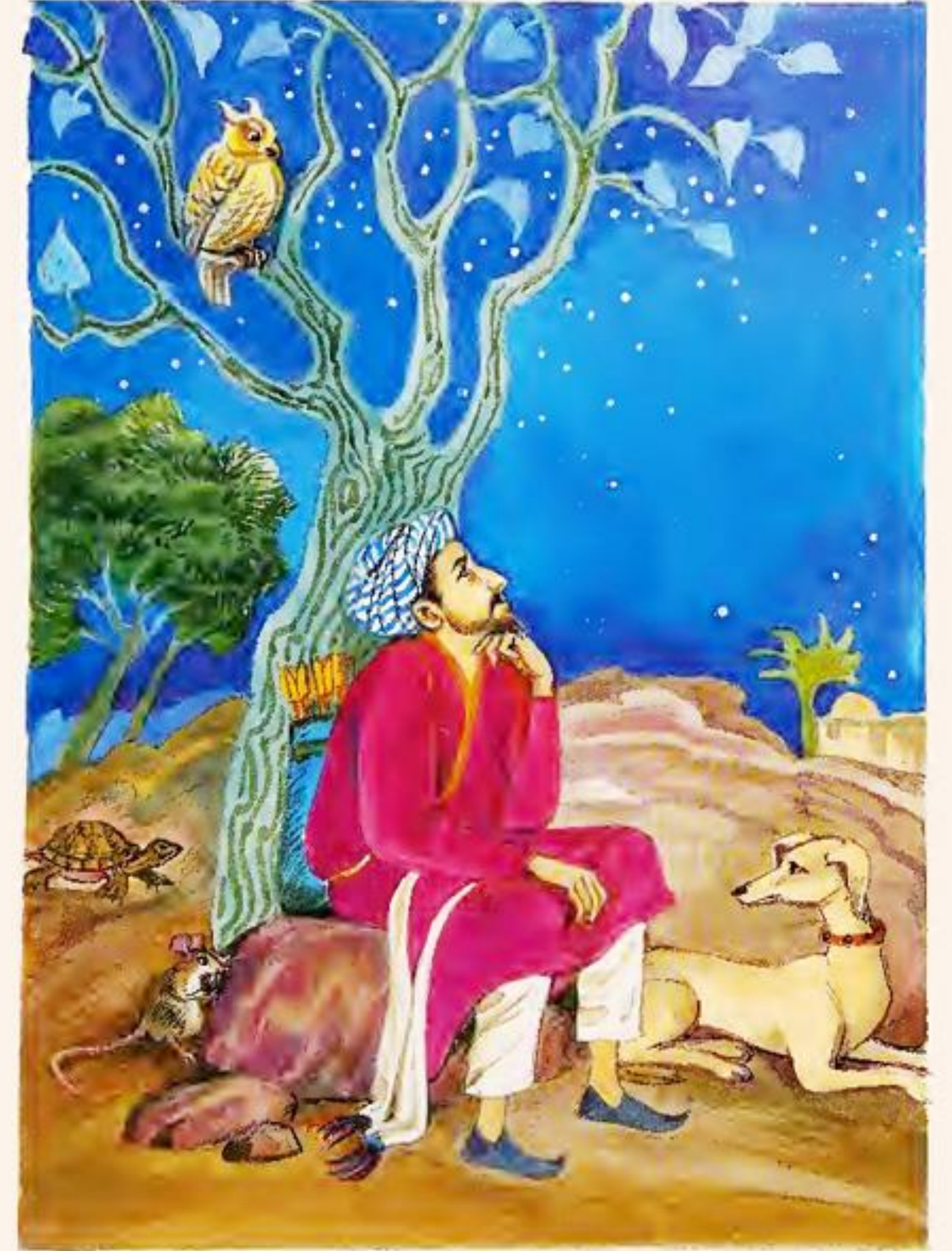
जब शिकारी ने एक घायल हिरन को रास्ते मे पड़े देखा तब उसने कछुए को अपने कंधे से गिरा दिया और वो बड़े हिरन को उठाने गया. इससे पहले कि शिकारी उस तक पहुँच पाता, हिरन कूद गया और घनी झाड़ियों में भाग गया, और अपने पीछे शिकारी को भी गहरे जंगल में ले गया. फिर चूहा कछुए के पास गया और उसने उसकी रस्सियां कुतर डालीं. जब तक थका हुआ शिकारी वापस लौटा, तब तक चारों दोस्त सुरक्षित उसकी दृष्टि से ओझल हो चुके थे.

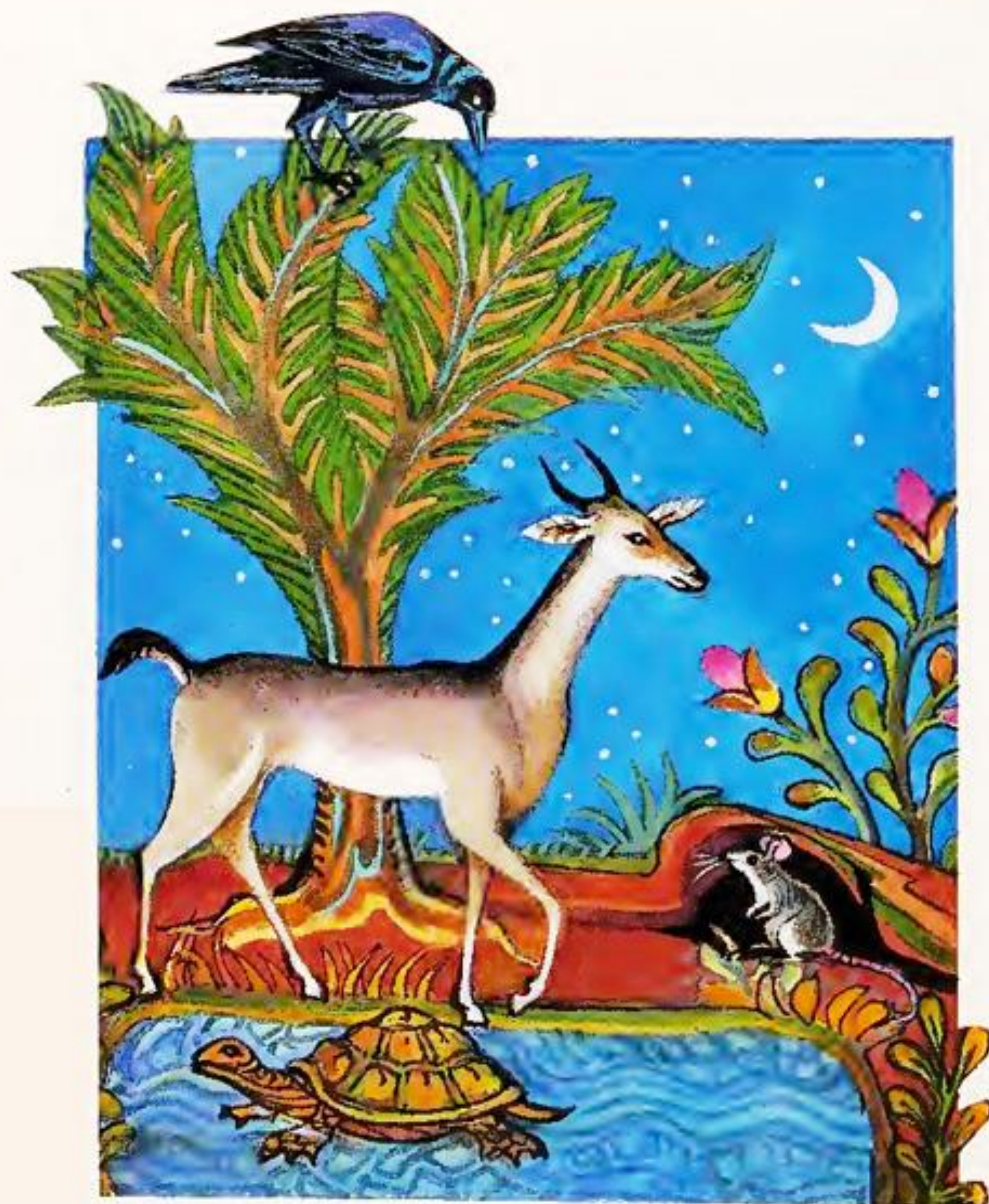




मूर्ख बनाए जाने से लज्जित और निराश होकर वो आदमी बिना कोई शिकार लिए अपने गांव लौट गया. पहले कबूतर उसके जाल के साथ उड़ गए थे, हिरन भी जाल से बाहर निकलकर भाग गया था और अब धीमा कछुआ भी किसी तरह भागने में कामयाब हुआ था. उस दिन से दुखी शिकारी ने फैसला किया कि अब से वो जंगल के दूसरे हिस्से में ही अपना शिकार करेगा.







कौआ, चूहा, कछुआ और हिरन एक बार फिर जंगल में तालाब के पास आकर बस गए और वहां उन्होंने अपने बाकी दिन शांति और खुशी से गुज़ारे.





बिदपाई की दंतकथाओं के बारे में

बिदपाई की मूल दंतकथाएं भारत में लगभग 300 ई.पू. के आसपास लिखी गई थीं. शायद बिदपाई एक ब्राह्मण ऋषि थे. ईसप की दंतकथाओं से कहीं पहले इन कहानियों को नैतिक उपदेश सिखाने के लिए, राजकुमारों को शासन करने की कला सिखाने के लिए और अच्छे और बुरे के बीच संघर्ष को स्पष्ट करने के लिए लिखा गया था. कहानियों में जानवरों के ज़रिये मानवीय लक्षण और महत्वाकांक्षाएं दर्शाई गईं थीं, जैसे लालच, क्रूरता, ईर्ष्या, विश्वासघात, दया और वफादारी.

इन अद्भुत कहानियों की खबर फारस के राजाओं के दरबार में पहुंची, और फिर उन्होंने इन प्राचीन पांडुलिपियों की एक प्रति लाने के लिए अपने चिकित्सक को भारत भेजा. उसके बाद चिकित्सक ने उन कहानियों का फारसी भाषा "पहलवी" में अनुवाद किया.